ज़ुल्म का मिज़ाज

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०)
अली मियाँ (रह०)

पयामे इन्सानियत फ़ोरम
पोस्ट बाक्स नं० ६३ लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

प्रस्तावना

आज पूरा विश्व विशेष रूप से हमारा प्रिय भारत जिन विकट परिस्थितियों से गुज़र रहा है, हर वह व्यक्ति के लिए जिसके अन्दर मानवता और मातृ–भूमि से प्रेम है इस समय बेचैन है कि इस महान देश की बिगड़ती स्थिति में हर वर्ष वृद्धि होती जा रही है जिससे देश का हर मनुष्य परेशान है इस समय देश को बचाने की आवश्यकता है। विश्व के महान विचारक पयामे इन्सानियत फोरम के संस्थापक हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी (रह०) ने देश में घूम–फिर कर मानवता का संदेश दिया जिसका आज भी सारे देश में स्वागत किया जा रहा है। अ़ली मियाँ (रह०) का यह ऐतिहासिक सम्बोधन है जो बाबरी मस्जिद के ध्वस्त की घटना के बाद पार्लियामेंट एनेक्सी भवन दिल्ली में अनेक महापुरुषों व देश के अत्यन्त महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारान और शंकराचार्य

www.abulhasanalinadwi.org

तथा अन्य धार्मिक नेताओं की उपस्थिति में डॉ० यूनुस नगरामी नदवी मरहूम भूतपूर्व चेयरमैन उर्दू एकेडमी उत्तर प्रदेश, सलाहकार राब्ते आलम इस्लामी मक्कतुल मुकर्रमा, मेम्बर क़ौमी यकजहती कौंसिल उत्तर प्रदेश द्वारा प्रस्तुत किया गया।

इस भाषण का अनुवाद मुहम्मद हसन अन्सारी सहायक सम्पादक हिन्दी मासिक "सच्चा राही" ने किया है। प्रथम बार दस हजार की संख्या में, देश में वितरित की जा चुकी है वर्तमान में दूसरी बार (द्वितीय) पयामे इंसानियत फोरम की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है आशा है कि इस भाषण से अधिक से अधिक लाभ उठाया जायेगा। जिससे देश में मानवता का बोल बाला हो और देश तथा देशवासियों का कल्याण हो।

प्यामे इन्सानियत फ़ोरम

दिनांक : 17-9-2003

www.abulhasanalinadwi.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

सज्जनो!

आज सौभाग्य से मुझे देश के इतने बुद्धिजीवियों विद्वानों, रिलिजस स्कालर्स, लीडर्स और पालीटिकल लीडर्स और देश के दृष्टा और प्रभावशाली व्यक्तियों के सामने अपनी बात कहने और अपना अनुभव व अध्यन तथा विनती व सुझाव रखने का अवसर मिल रहा है, जो इस से पहले (इस पैमाने पर) कभी नहीं मिला, और इसका भी यकीन नहीं कि आगे मिल सके। इस लिए मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं अपना दिल निकाल कर आप के सामने रख दूँ और यह शेर पढ़ूँ:–

'अमीर' जमा हैं अहबाब दर्द दिल कह ले
फिर इल्तिफ़ात दिले दोस्ताँ रहे न रहे

उपस्थित जनो!

मैं रामजन्म भूमि और बाबरी मस्जिद विवाद को वर्तमान हौलनाक फ़सादात और दिल दहला देने वाले अत्याचार का एकमात्र कारण नहीं समझता। मेरे नज़दीक यह अफ़सोसनाक बल्कि शर्मनाक घटनायें एक कारण नहीं बल्कि चार कारणों का प्रतिफल हैं जिन में आपस में करीबी रिशता है। उन का क्षेत्रफल

अधिक व्यापक, उनकी जड़ें अधिक गहरी और उनका इतिहास अधिक लम्बा है, वे निम्नलिखित हैं:—

१. साम्प्रदायिक घृणा (Cocmmunal Hatred) जिसे अँग्रेज़ी शासन ने अपने हित में और अपनी आवश्यकता साबित करने व न्यायोचित ठहराने (Justification) के लिए पैदा किया और नियोजित इतिहास और अतिश्योक्ति से परिपूर्ण परम्पराओं के द्वारा उस को पोषित किया। आज़ादी के बाद कुछ एक राजनीतिक पार्टियों ने सत्ता प्राप्ति के लिए इस का बाक़ी रहना ज़रूरी समझा और इस से लाभ उठाने का प्रयास किया।

२. अत्याचार और अनाचार (Tyraney) से नफ़रत का न होना और इन्सानी जान व माल और इज़्ज़त की बेक़ीमती।

३. अत्याचार के विरूद्ध आवाज़ उठाने वालों, उस के मुकाबले में लामबन्द (Confront) हो जाने वालों और उसको रोकने के लिए हर प्रकार का ख़तरा मोल लेने वालों की कमी, विशेषकर इस मौक़े पर रेलिजस लीडर्स, प्रतिष्ठित व्यक्तियों और इन्टेलेकचुअल्स (बुद्धिजीवियों) का मैदान में न आना, और हालात से मुक़ाबला न करना।

४. सरकार और सत्ता (Power) को हर माध्यम से प्राप्त करने की कोशिश करने और इस

www.abulhasanalinadwi.org

के लिए हर नियम व सिद्धान्त तथा सच्चाई और इन्साफ़ को बलि चढ़ा देने की प्रवृत्ति, फिर चुनाव (Election) का वह तरीक़ा जिस में हर नियम व आचरण की अनदेखी कर और देश हित की अनदेखी कर के अधिक से अधिक लोगों का समर्थन (Support) प्राप्त हो सके।

हर देश और हर युग तथा प्रत्येक धर्म व समाज का इतिहास बताता है कि हर देश व समाज (Society) बारम्बार बदनीयत (बुरी निष्ठा), विकारयुक्त तथा विखण्डन पसन्द नेतृत्व (Divisie Forces) साज़िशों (Conspiracies) का शिकार हुए हैं और ऐसा दिखने लगा है कि मानवता (Humanity) समाप्ति होने को है, वह बहुत जल्दी दम तोड़ देगी। किन्तु यही इतिहास बताता है कि ऐसे हर मौक़े पर ऐसे कुछ लोग मैदान में आ गये जिन्हों ने ज़माने की आँखों में आँखें डाल कर हालात का मुकाबला किया। इन ग़लत नेतृत्वों और पथप्रर्दशकों के सामने बाधा बन कर खड़े हो गये और जान की बाज़ी लगादी। मानव सभ्यता (Civilisation) का क्रम (Continuity) जो अभी तक क़ायम है मात्र पीढ़ियों का क्रम नहीं, मानवीय गुणों (Human Qualities) का क्रम है जो हर युग में रहा है। मानवीय भावनाओं, शारीफ़ाना जज़बात, उच्च उद्देश्य, नैतिक शिक्षा और इनके अस्तित्व तथा विकास के लिए हिम्मत व

www.abulhasanalinadwi.org

उत्साह और त्याग की भावना जो इस समय तक चली आर रही है, यह वास्तव में उन्हीं लोगों के प्रति अनुग्रहीत है जो बिगड़े हुए हालात में मैदान में आये और उन बिगड़े हुए हालात से पँजा लड़ाया और बाज़ अवक़ात (प्रायः) ज़माने की कलाई (मैं यह नहीं कहता कि तोड़ दी) मोड़ दी। इन्हीं लोगों क़ी बदौलत इन्सानियत ज़िन्दा है और अख़लाक़ व शराफ़त का भ्रम क़ायम है।

इन्सानियत की खेती हर ज़माने में खाद चाहती है। जिस प्रकार फ़र्टीलाइज़र्स भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाते हैं, पैदावार को ताक़त प्रदान करते हैं उसी प्रकार इन्सानियत की खेती के लिए भी खाद की ज़रूरत है। इन्सानियत की खेती के लिए खाद व्यक्तिगत और पार्टी इन्टेरेस्ट्स हैं, उद्देश्य व लाभ की यह खाद जब उस खेती में पड़ जाती है तो वह खेती लहलहा उठती है, ज़मीन अपनी पैदावार बढ़ा देती है, इन्सानियत की झोली भर जाती है और उसको जीवन की एक नई क़िस्म मिल जाती है (A New Life) मानवता के अस्तित्व की सच्ची पक्की ज़मानत वे वीर बांकुरे और जांबाज़ व सहृदय इन्सान हैं जो चोट खाये दिल रखते हैं, जो हालात का सामना करते हैं, चोट को बरदाश्त करते हैं और इतिहास के धारे को बदलने के लिए जान की बाज़ी लगा देते हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

सज्जनो,

किसी समाज के लिए सबसे बड़ा ख़तरा यह है कि उसमें ज़ुल्म का मिज़ाज (Temperament) पैदा हो जाये, फिर इससे ज़्यादा ख़तरनाक बात यह है कि उसको नापसन्द करने वाले इतने कम और छिपे हुए लोग हों जो दूरबीन तो दूरबीन (Telescope) ख़ुर्दबीन (Microscope) से भी नज़र न आयें। घर में बैठकर नापसन्द करने वाले तो मिल जायेंगे जो चार छः आदमियों की मौजूदगी में कह दें कि यह ठीक नहीं हो रहा है, लेकिन जो अपनी नापसन्दीदगी का एलान करें और उसको लेकर मैदान में आ जायें, वह उँगलियों पर गिने जा सकते हैं।

जब ज़ुल्म के लिए मापदण्ड यह बन गया कि ज़ालिम कौन है? ज़ालिम (अत्याचारी) की राष्ट्रीयता (Nationality) ज़ालिम का समुदाय (Sect) क्या है? ज़ालिम की भाषा क्या है? उसका मज़हब क्या है? तो इन्सानियत के लिए एक बड़ा ख़तरा पैदा हो जाता है। जब आदमी अख़बार में किसी फ़साद किसी ज़ुल्म व ज़्यादती की ख़बर देखे तो पहले उसकी निगाहें यह तलाश करें कि किस समुदाय के किस फ़िर्के की तरफ़ से यह बात शुरू हुई ? इसमें नुक़सान किस फ़िर्के को ज़्यादा पहुंचा? जब ज़ुल्म को नापने और ज़ालिम होने के फ़ैसले

www.abulhasanalinadwi.org

का यह पैमाना बन जाता है तो उस समय समाज को कोई ताक़त और बड़ी बड़ी रचनात्मक योजनायें (Plans) भी नहीं बचा सकतीं।

बुज़ुर्गों और भाइयो !

जब किसी इन्सान और समुदाय की साज़िश अथवा बिखराव पसन्द ताक़त (Divisive Forces) की सोसाइटी शिकार होती है और किसी समाज को इनका सामना होता है तो इतिहास बताता है कि उस समय प्रायः दो वर्ग के लोग मैदान में आते हैं– एक बुद्धिजीवियों (Intellectuals) का वर्ग और एक मज़हबी इन्सानों का वर्ग। यह दो तब्क़े हैं जिनमें बिगाड़ सबसे अख़ीर में दाख़िल होता है, खासतौर पर मज़हबी इन्सानों का तब्क़ा। लेकिन जब इस वर्ग में भी ग़फ़लत, तसाहुली (अकर्मण्यता) (Apathy) और फ़र्ज़ नाशनासी (कर्तव्यविमूढ़ता) पैदा हो जाती है तो इस दलदल से कोई ताक़त निकाल नहीं सकती। मैं किसी क्षमायाचना के बिना साफ़ कहता हूँ कि देश का और अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास का एक विद्यार्थी और तुच्छ लेखक हूँ, मैं नहीं समझता हमारा भारतीय समाज कभी ऐसे ख़त्रे से दो चार हुआ हो जैसा कि इस काल में (३०–३५ वर्ष के अन्दर) हुआ है। मैं इस पर बिल्कुल क्षमायाचना नहीं करूंगा। हिन्दुस्तान का जिस्म (शरीर) बारहा ज़ार व नज़ार (चोट खाया) हुआ, हिन्दुस्तान पर

www.abulhasanalinadwi.org

ब्रिटेन की वर्षों विदेशी (Allien) हुकूमत रही। यह सब इतिहास की घटनायें हैं, किन्तु हिन्दुस्तान की आत्मा और हिन्दुस्तान का अन्तःकरण इस तरह कमज़ोर नहीं हुआ था कि उसने अपना काम छोड़ दिया हो। हिन्दुस्तान के इतिहास में कभी ऐसा दौर नहीं आया कि बुराई और ज़ालिम को इस आसानी के साथ सहन कर लिया गया हो जिस आसानी के साथ आज गवारा (सहन) किया जा रहा है, बल्कि इस को फ़िलास्फ़ी बनाया जा रहा है, इसके द्वारा पार्टियों को सुदृढ़ और सुसंगठित किया जा रहा है। हिन्दुस्तान सैकड़ों मुसीबतों का शिकार हुआ है, लेकिन मानव अन्तःकरण (Conscience) हिन्दुस्तान का ज़िन्दा रहा उसने अपना काम करना (Function) कभी छोड़ा नहीं। इस समय जो असल ख़तरा की चीज़ है वह उर्दू के एक शायर के बक़ौल और मौलाना आज़ाद के पसन्दीदः शेर के मुताबिक यहः—

मुझे यह डर है कि दिले ज़िन्दा तू न मर जाये
कि ज़िन्दगी ही इबारत है तेरे जीने से

इन्सानियत की हिफ़ाज़त इसी Conscience ने की है तोप व तल्वार ने नहीं की है, सेना व फ़ौज ने नहीं की है, शाही ख़ज़ानों और दौलत की बुहतात ने नहीं की है, ज्ञान के विकास ने नहीं की है। मुझे जो ख़तरा है वह यह है कि हिन्दुस्तानी समाज की आत्मा ठहराव (Stagnation) का शिकार

www.abulhasanalinadwi.org

न हो गई हो, उसने अपना काम करना न छोड़ दिया हो। यह असल ख़तरा की बात है इसलिए कि इन्सानियत की आस इसी अन्तःकरण से है। इन्सानों के भाग्य का जहाँ तक सम्बन्ध है, हुकूमतों, सभ्यताओं और समाजों के भाग्य का जहां तक सम्बन्ध है ज़ुल्म व अत्याचार उनके लिए मौत का पैग़ाम है। ज़ुल्म के बाद इनको ढ़ील नहीं दी जाती और वह पतन के शिकार हो जाते हैं।

सज्जनों ! अगर मैं ने कुछ कड़ुवे सच कटु अन्दाज़ में कहे हैं तो मैं क्षमा चाहता हूँ क्योंकि जब यथार्थ की कड़वाहट सीमा पार कर जाती है तो कोई मीठी वाणी उसे मीठा नहीं बना सकती, वह छलावा मात्र होता है। मैंने एक कड़वे सच को तल्ख़ अन्दाज़ (तीखी शैली) में कहा है, इस पर मैं आप से क्षमा प्रार्थी हूं। हमारी सोसाइटी का रोग यह है कि बहुत दूर से चलकर अपनी पार्टी और अपने समुदाय को सुरक्षित रखते हुए, उस को बचाते हुए हज़ार बचाव के साथ इस प्रकार कही जाती है कि कोई पकड़ न सक़े। उनको पकड़े जाने की चिन्ता अधिक होती है और सोसाइटी के तबाह होने की कम। लेकिन जब आग लगी हो तो यह तकल्लुफ़ात (Cautions) व संकोच और बात चीत के आदाब बाक़ी नहीं रहते। जब आग लगी होती है तो किसी भाषा में कैसे हो बेढँगे तरीक़ा से उसका एलान

www.abulhasanalinadwi.org

किया जाता है, बेज़बान बच्चा भी बोल उठता है कि आग लगी है। इस समय वस्तुस्थिति यही है न इससे कम न इससे ज़्यादा। इस समय हमारा समाज ज्वालामुखी (Valcano) के दहाने पर खड़ा है, अगर कोई चीज़ इसको बचा सकती है तो वह सच्चे मज़हबी इन्सानों, साहसी बुद्धिजीवियों और निःस्वार्थ लीडरों का मैदान में आना, हालात से पंजा आज़माई करना, और अपना व्यावहारिक नमूना दुनिया के सामने और कम से कम भारत के सामने प्रस्तुत करना है। निराशा और बदशगूनी की कोई बात नहीं, मात्र निष्ठा, संकल्प, साहस और श्रम व त्याग की आवश्यकता है। इस देश को दुनिया के नैतिक नेतृत्व का दायित्व निभाना तथा सिद्धान्त व आचरण पर आधारित सही लोकतंत्र और इन्सान दोस्ती का आदर्श प्रस्तुत करना है और यह हर प्रकार से इस देश की गरिमा के अनुरूप और अगर इसके लिए निष्ठा के साथ प्रयास किया गया तो आसान है।

अन्त में आप सब के प्रति आभारी हूँ कि आपने मेरी विनती को धैर्य व शान्ति के साथ तथा विश्वास व सम्मान वर्धन के साथ सुना।

मैं आपके प्रति हृदय से आभारी हूँ।

—अबुल हसन अली नदवी (रह०)

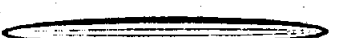

www.abulhasanalinadwi.org

10

नफ़रत की आग को बुझाइये

हज़रत अली मियाँ का सदुपदेश

सज्जनों! यदि दिल को चीर कर या आँसुओं को बहाकर देश के पर्वतों, वृक्षों और नदियों के ज़रिये हम आपको इस देश की कराह सुनवा सकते तो अवश्य इस कराह को आप तक पहुँचाते। यदि वृक्ष और पशु बोलते तो वे आपको बताते कि इस देश की अन्तरात्मा घायल हो चुकी है। उसकी प्रतिष्ठा और ख्याति को बट्टा लगाया जा चुका है और वह पतन एवं अग्नि परीक्षा के एक बड़े खतरे में पड़ गयी है। आज सन्तों, धार्मिक लोगों, दार्शनिकों, लेखकों और आचार्यों को मैदान में आने, नफ़रत की आग बुझाने और प्रेम का दीप जलाने की आवश्यकता है। इस देश की नदियाँ, पर्वत और देश के कण कण तक आपसे अनुरोध कर रहे हैं कि आप इंसानों का रक्तपात न कीजिए, नफ़रत के बीज मत बोइये, मासूम बच्चों को अनाथ होने से और महिलाओं को विधवा होने से बचाइये। भारत को जिन विभूतियों ने स्वाधीन कराया था, उन्होंने अहिंसा, सद्व्यवहार और जनतंत्र के पौधों की सुरक्षा का दायित्व हमें सौंपा था और निर्देश दिया था कि इन पौधों को हाथ न लगाया जाय, किन्तु हम उनकी सुरक्षा में असफल रहे। इसके फलस्वरूप हिंसा और टकराव का दानव हमारे सामने मुँह खोले खड़ा है। नफ़रत और हिंसा की आग हमारी उन समस्त परम्पराओं को जला देने

www.abulhasanalinadwi.org

पर तत्पर है, जिनके लिए हम समस्त संसार में विख्यात थे और आदर एवं प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखे जाते थे। हमारी ग़लतियों ने बाहरी देशों में हमारा सिर नीचा कर दिया और हमारी स्थिति यह हो गयी कि हम मुँह दिखाने योग्य नहीं रह गये।

नफ़रत की इस आग को बुझाइये और याद रखिये! जब यह हिंसा किसी देश या कौम में आ जाती है तो फिर दूसरे धर्म वाले ही नहीं, अपनी ही कौम और धर्म की जातियाँ और विरादरियाँ, परिवार, मुहल्ले, कमज़ोर और मोहताज इंसान और जिनसे लेशमात्र भी विरोध हो, उसका निशान बनते हैं।

(पटना (बिहार) के श्री कृष्ण प्रेक्षागार में ३० जून १९६३ को आयोजित "प्यामे–इंसानियत" कार्यक्रम में दिये गये हज़रत अली मियाँ के भाषण का अंश।)

www.abulhasanalinadwi.org

अखिल भारतीय मानवता सन्देश अभियान

२८,२९ और ३० दिसम्बर सन् १९७४ ई०, को इलाहाबाद से एक नये अनुभव का शुभारम्भ हुआ। देश की दिन प्रति–दिन बिगड़ती हुई परिस्थिति और यहाँ मानवता तथा नैतिक मान्यताओं के पतन से प्रभावित होकर नईम मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह० (अली मियाँ) ने धर्म तथा सम्प्रदाय में भेद–भाव किये बिना समाज के प्रत्येक वर्ग से सम्पर्क स्थापित करने तथा प्रवचनों द्वारा मानवोत्थान के लिए एक संघर्ष का आरम्भ किया। ऐसे पवित्र महत्वूपर्ण समयानुकूल एवं शुभ कार्य का प्रारम्भ इलाहाबाद नगर से किया गया : जिसके नामकरण का उल्लेख मौलाना के शब्दों में इस प्रकार वर्णित है :–

"इलाहाबाद से हमने इस कार्य का शुभारम्भ किया है क्योंकि इसका नाम ही 'इलाहाबाद' अर्थात् (ईश्वर की नगरी) है। अतः यहीं से ईश्वर भक्ति का आन्दोलन एवं मानवता के उत्थान का आहवान होना चाहिए। खुदा के बन्दों का सत्कार करने, मानवता को नया जीवन प्रदान करने तथा इन्सानों को मानवता एवं नैतिकता का भूला हुआ पाठ स्मरण कराने का कार्य वास्तव में इसी नगर से होना चाहिए था, जो ईश्वर के नाम से बसा हुआ है।"

मौलाना के इसी आव्हान को समस्त देश में मानवता तथा नैतिकता के आन्दोलन एवं संघर्ष का रूप देने के लिए लखनऊ में, "अखिल भारतीय मानवता सन्देश अभियान" की स्थापना हुई है। यह कोई नयी संस्था, राजनीतिक दल अथवा पार्टी नहीं है, बल्कि यह एक नयी एवं अपरिचित पुकार लगाने

www.abulhasanalinadwi.org

वालों का सार्वजनिक प्लेटफॉर्म है।

यदि आप इस आव्हान एवं आन्दोलन को देश के लिए आवश्यक समझते हों, तो सत्यता एवं मानवता के इस नवीन काफिले में सम्मिलित हो जाइये।

अभिप्राय तथा उद्देश्य

१. केवल मानव सम्बन्ध तथा भारतीय नाते से देश में भाई चारे का वातावरण बनाना, अत्याचार, निराज, अराजकता तथा दुराचार का समाधान, लोक सम्बन्ध अभियान एवं सभाएं और सेमिनार करना।

२. लाभकारी तथा नैतिक साहित्य का विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन, लोक सेवा द्वारा रूठे तथा परस्पर लड़े हुओं का जीवन के वास्तविक एवं उद्देश्य का ज्ञान कराना।

३. समाज से घूस, स्वार्थ परायणता, भ्रष्टाचार, संचयकारिता, साम्प्रदायिकता तथा आर्थिक शोषण को दूर करना और निलज्जा एवं वस्त्रहीनता के विरुद्ध प्रयास करना।

४. अनुचित तथा अत्याचार पूर्ण रीतियों एवं प्रथाओं की समाप्ति की चेष्टा करना।

५. देश के उत्पीड़ित, पिछड़े, निर्धन एवं व्याकुल जनों की, धर्म आदि के भेद–भाव के बिना, यथा सम्भव सहायता करना।

६. नवयुवकों विशेषतया विद्यार्थियों में गम्भीरता, योग्यता तथा समाज सेवा का उल्लास उत्पन्न करना ताकि देश को नवयुवकों की पथ भ्रष्टता की हानि से बचाया जा सके।

७. अपने प्रभाव क्षेत्र, मुहल्ला, बस्ती, नगर तथा पूरे देश में भ्रातृ–भाव का वातावरण पैदा करने की सम्भव चेष्टा करना।

www.abulhasanalinadwi.org